तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥

अर्थ - [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं।

अध्याय १: सूत्र १५ - मतिज्ञान के क्रम के भेद

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- जीव को अनादि काल से अपने स्वरूप का भ्रम है, इसलिए पहिले आत्मज्ञानी पुरुष से आत्मस्वरूप को सुनकर, युक्ति के द्वारा यह निर्णय करना चाहिए कि आत्मा ज्ञानस्वभाव है, तत्पश्चात् —

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- परपदार्थ की प्रसिद्धि के कारण–इन्द्रिय द्वारा तथा मन द्वारा प्रवर्तमान बुद्धि को मर्यादा में लाकर, अर्थात् परपदार्थों की ओर से अपना लक्ष्य खींचकर,

- जब आत्मा स्वयं स्वसन्मुख लक्ष्य करता है, तब प्रथम सामान्य स्थूलतया आत्मा सम्बन्धी ज्ञान हुआ, वह आत्मा का **अर्थावग्रह** हुआ;

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- तत्पश्चात् स्व-विचार के निर्णय की ओर उन्मुख हुआ, सो ईहा और निर्णय हुआ, सो अवाय, अर्थात् ईहा से ज्ञात आत्मा में 'यह वही है, अन्य नहीं'—ऐसा दृढ़ ज्ञान, अवाय है।
- आत्मा सम्बन्धी कालान्तर में संशय तथा विस्मरण न हो, सो धारणा है। यहाँ तक तो मतिज्ञान में धारणा तक का अन्तिम भेद हुआ।

अवग्रहेहावायधारणाः ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- इसके बाद यह आत्मा अनन्त ज्ञानानन्द शान्तिस्वरूप है, इस प्रकार मति में से प्रलम्बित तार्किक ज्ञान, श्रुतज्ञान है।
- भीतर स्वलक्ष्य में मन-इन्द्रिय निमित्त नहीं है। जब जीव उससे-अंशतः पृथक् होता है, तब स्वतन्त्र तत्त्व का ज्ञान करके उसमें स्थिर हो सकता है।

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- अवग्रह या ईहा हो, किन्तु यदि वह लक्ष्य चालू न रहे तो आत्मा का निर्णय नहीं होता, अर्थात् अवाय ज्ञान नहीं होता; इसलिए अवाय की अत्यन्त आवश्यकता है।

- यह ज्ञान होते समय विकल्प, राग, मन या परवस्तु की ओर लक्ष्य नहीं होता, किन्तु स्वसन्मुख लक्ष्य होता है।

अवग्रहेहावायधारणा: ॥ १५ ॥ - स्व [आत्मा] सम्बन्धी विकल्पात्मक मतिज्ञान

- सम्यग्दृष्टि को अपना (आत्मा का) ज्ञान होते समय इन चारों प्रकार का ज्ञान होता है। धारणा तो स्मृति है। जिस आत्मा को सम्यग्ज्ञान अप्रतिहत (निर्बाध) भाव से हुआ हो, उसे आत्मा का ज्ञान, धारणारूप बना ही रहता है ॥१५ ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १५

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र १६

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥

अर्थ – [अवग्रह ईहा अवाय धारणाः] अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा, यह चार भेद हैं। [बहु] बहुत [बहुविध] बहुत प्रकार [क्षिप्र] जल्दी [अनिःसृत] अनिःसृत [अनुक्त] अनुक्त [ध्रुवाणां] ध्रुव [सेतराणां] उनसे उल्टे भेदों से युक्त अर्थात् एक, एकविध, अक्षिप्र, निःसृत, उक्त, और अध्रुव; इस प्रकार बारह प्रकार के पदार्थों का अवग्रह ईहादिरूप ज्ञान होता है।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।१६ ।। - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ
बहु	एक
बहुविध	एकविध
क्षिप्र	अक्षिप्र
अनि:सृत	नि:सृत
अनुक्त	उक्त
ध्रुव	अध्रुव

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - बहु-एक का स्वरूप

(१) **बहु** - एक ही साथ बहुत से पदार्थों का अथवा बहुत से समूहों का अवग्रहादि होना, (जैसे लोगों के झुण्ड का अथवा गेहूँ के ढेर का) बहुत से पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

(२) **एक** - अल्प अथवा एक पदार्थ का ज्ञान होना, (जैसे - एक मनुष्य का अथवा पानी के प्याले का) थोड़े पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - बहुविध-एकविध का स्वरूप

(३) **बहुविध** – कई प्रकार के पदार्थों का अवग्रहादि ज्ञान होना, (जैसे कुत्ते के साथ का मनुष्य अथवा गेहूँ, चना, चावल इत्यादि अनेक प्रकार के पदार्थ), युगपत् बहुत प्रकार के पदार्थों का ज्ञानगोचर होना।

(४) **एकविध** – एक प्रकार के पदार्थों का ज्ञान होना, (जैसे एक प्रकार के गेहूँ का ज्ञान), एक प्रकार के पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - क्षिप्र-अक्षिप्र का स्वरूप

(५) क्षिप्र - शीघ्रता से पदार्थ का ज्ञान होना।

(६) अक्षिप्र - किसी पदार्थ को धीरे-धीरे बहुत समय में जानना, अर्थात् चिरग्रहण।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - अनि:सृत-नि:सृत का स्वरूप

(७) **अनि:सृत** - एक भाग के ज्ञान से सर्वभाग का ज्ञान होना, (जैसे पानी के बाहर निकली हुई सूंड को देखकर पानी में डूबे हुए पूरे हाथी का ज्ञान होना), एक भाग के अव्यक्त रहने पर भी ज्ञानगोचर होना।

(८) **नि:सृत** - बाहर निकले हुए प्रगट पदार्थ का ज्ञान होना, पूर्णव्यक्त पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - अनुक्त-उक्त का स्वरूप

(९) अनुक्त - (अकथित) जिस वस्तु का वर्णन नहीं किया, उसे जानना। जिसका वर्णन नहीं सुना है, फिर भी उस पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

(१०) उक्त - कथित पदार्थ का ज्ञान होना। वर्णन सुनने के बाद पदार्थ का ज्ञानगोचर होना।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ॥ १६ ॥ - ध्रुव-अध्रुव का स्वरूप

(११) ध्रुव – बहुत समय तक ज्ञान जैसा का तैसा बना रहना, अर्थात् दृढ़तावाला ज्ञान।

(१२) अध्रुव – प्रतिक्षण हीनाधिक होनेवाला ज्ञान, अर्थात् अस्थिरज्ञान।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - चक्षु इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [१]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	सफेद	काला	नीला	लाल	हरा
बलवान	बहु	√	√	√	√	√
मंद	एक	√	x	x	x	x
बलवान	बहुविध	√	√	√	√	√
मंद	एकविध	x	√	x	x	x

[१] दृष्टांत

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।१६ ।। - चक्षु इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [१]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	सफेद	काला	नीला	लाल	हरा
बलवान	क्षिप्र	√	√	√	√	√
मंद	अक्षिप्र	x	x	√	x	x
बलवान	अनि:सृत	√	√	√	√	√
मंद	नि:सृत	x	x	x	√	x

[१] दृष्टांत

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - चक्षु इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [१]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	सफेद	काला	नीला	लाल	हरा
बलवान	अनुक्त	√	√	√	√	√
मंद	उक्त	x	x	x	x	√
बलवान	ध्रुव	√	√	√	√	√
मंद	अध्रुव	√	x	x	x	x

[१] दृष्टांत

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - श्रोत्र इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [१]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	तत [तांत का शब्द]	वितत [ताल का शब्द]	घन [काँसे के वाद्य का शब्द]	सुधिर [बाँसुरी आदि का शब्द]
बलवान	बहु	√	√	√	√
मंद	एक	√	x	x	x
बलवान	बहुविध	√	√	√	√
मंद	एकविध	x	√	x	x

[१] दृष्टांत

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - श्रोत्र इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [1]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	तत [तांत का शब्द]	वितत [ताल का शब्द]	घन [काँसे के वाद्य का शब्द]	सुधिर [बाँसुरी आदि का शब्द]
बलवान	क्षिप्र	√	√	√	√
मंद	अक्षिप्र	x	x	√	x
बलवान	अनि:सृत	√	√	√	√
मंद	नि:सृत	x	x	x	√

[1] दृष्टांत

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - श्रोत्र इन्द्रिय द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह [1]

ज्ञान की विशुद्धि	अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	तत [तांत का शब्द]	वितत [ताल का शब्द]	घन [काँसे के वाद्य का शब्द]	सुधिर [बाँसुरी आदि का शब्द]
बलवान	अनुक्त	√	√	√	√
मंद	उक्त	√	x	x	x
बलवान	ध्रुव	√	√	√	√
मंद	अध्रुव	x	√	x	x

[1] दृष्टांत

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - अन्य इन्द्रियाँ द्वारा १२ प्रकार का अवग्रह

३-४-५- घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय

घ्राण-रसना और स्पर्शन इन तीन इन्द्रियों के द्वारा उपर्युक्त बारह प्रकार के अवग्रह के भेद, श्रोत्र और चक्षु इन्द्रिय की भाँति समझ लेना चाहिए।

बहुबहुविधक्षिप्रानि:सृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां।।१६।। - मतिज्ञान के क्रम के भेद

ईहा–अवाय और धारणा—चालू सूत्र का शीर्षक 'अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ' है; उसमें अवग्रहादि के कहने पर, जैसे बारह भेद अवग्रह के कहे हैं। उसी प्रकार ईहा–अवाय और धारणा ज्ञानों का भी विषय मानना चाहिए।

अध्याय १: सूत्र १६ - अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ

बहुबहुविधक्षिप्रानिःसृतानुक्तध्रुवाणां सेतराणां ।।१६ ।। - मतिज्ञान के भेदो की संख्या

अवग्रहादि के विषयभूत पदार्थ	मन एवं इन्द्रियाँ	मतिज्ञान का क्रम	कुल भेद
बहु-एक	स्पर्श	अवग्रह	
बहुविध-एकविध	रस	ईहा	
क्षिप्र-अक्षिप्र	गन्ध	अवाय	
अनिःसृत-निःसृत	वर्ण	धारणा	
अनुक्त-उक्त	श्रोत्र		
ध्रुव-अध्रुव	मन		
१२	६	४	२८८

जिनवाणी स्तुति